बंगाल में ब्रिटिश राज का उत्कर्ष एवं प्लासी का युद्ध (Conquest of British Raj in Bengal and Battle of Plassy) :→

अंग्रेजो ने बंगाल में अपनी प्रथम कोठी (गोदाम) 1651 ई० में हुगली के तत्कालीन बंगाल के सुबेदार शाह जहान के दूसरे पुत्र शाहशुजा की अनुमति से बनाई। उसी वर्ष एक राजवंश की स्त्री की डॉक्टर बौटन द्वारा चिकित्सा करने पर उसने अंग्रेजो को 3000 रुपया वार्षिक में बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा में मुक्त व्यापार की अनुमति दे दी। अंग्रेजों ने कासिम बाजार, पटना तथा अन्य स्थानों पर कोठियां बना ली। 1717 ई० में सम्राट फर्रुखशियर ने पुराने सूबेदारों द्वारा दी गई व्यापारिक रियायतों को पुनः पुष्टि कर दी तथा उन्हें कलकत्ता के आस-पास के अन्य क्षेत्रों को भी किराए पर लेने की अनुमति दे दी।

1714 ई० में बिहार का नायब सूबेदार अलीवर्दी खां बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा के नायब सरफराज खां से विद्रोह कर, उसे युद्ध में मार कर स्वयं इस समस्त प्रदेश का नवाब बन गया। अपनी स्थिति को और भी सुदृढ़ करने के लिए उसने सम्राट मुहम्मद शाह से बहुत से धन के बदले एक पुष्टि-पत्र (Confirmation) प्राप्त कर लिया। पश्चात् उसी अलवर्दी खां की मृत्यु के पश्चात् सिराजुद्दौला उसका उत्तराधिकारी बना। नए नवाब को अपने प्रतिद्वन्द्वी पूर्णियाँ के नवाब शौकतगंज और अपनी मौसी घसीटी बेगम के अतिरिक्त अंग्रेजो से भी निबटना था दूसरी और अंग्रेजों को आंग्ल-फ्रांसीसी युद्ध की आशंका

थी। इसलिए कलकत्ता में फोर्ट विलियम की किलाबन्दी कर ली तथा उसके परकोटे पर तोप चढ़ा दी। अंग्रेजो को इन कार्यों से रोका गया तो उन्होंने टालमटोल कर ली। सिराज ने देखा कि उसकी आज्ञा का उसी राज्य में उल्लंघन हो रहा है तो उसने अंग्रेजो के विरुद्ध अभियान किया। 15 जून 1756 को फोर्ट विलियम घेर लिया गया तथा 5 दिन पश्चात् उसने आत्म-समर्पण कर दिया। नवाब कलकत्ता को मानिकचन्द के हाथ देकर स्वयं मुर्शिदाबाद लौट गया।

Black Hole ब्लैक होल कांड :→

युद्ध की आम प्रणाली के अनुसार अंग्रेज बंदियों को जिसमें स्त्रियां एवं बालक भी सम्मिलित थे, एक कक्ष में बन्द कर दिया गया। कहा जाता है कि 18 फुट लम्बे तथा 14 फुट 10 इंच चौड़े कक्ष में 146 बन्दी बन्द कर दिए। 20 जून को रात्रि को यह बन्द किए गए तथा अगले सुबह उनमें से केवल 23 व्यक्ति ही बच पाए। शेष जून की गर्मी तथा घुटन के कारण मर गए।

सिराजुद्दौला को इस घटना के लिए उत्तरदायी माना जाता है। जे० जैड० हॉलवेल जो जीवित रहने वालों में से एक थे तथा इस घटना / कथा के रचयिता माना जाता है। ने इस घटना में मरने वालों के नाम नहीं दिये। सम्भवत: उन्हें रक्षक कक्ष अथवा दुर्ग के जेल में ही बन्द किया गया था। यह एक मनगढ़त घटना हॉलवेल द्वारा कहा गया है ऐसा इतिहासकारों

का मानना है। इस घटना को कोई महत्व नहीं दिया। समकालीन इतिहासकार गुलाम हुसैन ने अपनी पुस्तक सियार-उल-मुत्खेरीन में इसका कोई उल्लेख नहीं किया। परन्तु ईस्ट इंडिया कम्पनी ने इस घटना को नवाब के विरुद्ध लगभग 7 वर्ष तक चलते रहने वाले आक्रामक युद्ध के लिए प्रचार का कारण बनाए रखा तथा अंग्रेजी जनता का समर्थन प्राप्त कर लिया। यह घटना इसके पश्चात् होने वाले प्रतिकार के लिए विशेष महत्व रखती है।

प्लासी का युद्ध (Battle of Plassy)

ज्योंही कलकत्ता के पतन का समाचार मद्रास पहुंचा वहां के अधिकारियों ने एक सेना जो उन्होंने फ्रांसीसियों के विरुद्ध युद्ध के लिए शक्ति की थी, क्लाइव के नेतृत्व में कलकत्ते भेज दी। क्लाइव को अपना कार्य शीघ्रातिशीघ्र पूर्ण करने को कहा गया क्योंकि यह सेना फ्रांसीसियों के विरुद्ध युद्ध के लिए मद्रास में चाहिए थी। यह सेना 16 अक्टूबर को मद्रास से चली और 14 दिसम्बर को बंगाल पहुंची। नवाब के प्रमादी अधिकारी मानिकचन्द ने घूस लेकर कलकत्ता अंग्रेजों को सौंप दिया। फरवरी 1757 में नवाब ने क्लाइव से अलीनगर की संन्धि पर हस्ताक्षर किए इसके अनुसार अंग्रेजों को व्यापार के पुराने अधिकार मिल गए जिनमें कलकत्ता की किलाबन्दी करने की अनुमति भी

Scanned with CamScanner

भी प्राप्त हो गई। उनकी क्षतिपूर्ती की भी प्रण किया गया। अब अंग्रेज आक्रान्ता की भूमिका में थे। नवाब के प्रमुख अधिकारी उससे असंतुष्ट थे। क्लाइव ने इसका लाभ उठाकर एक षडयंत्र रच्या। जिसमे नवाब का प्रधान सेनापति मीरजाफर, बंगाल का एक प्रभावशाली साहूकार जगत सेठ, रायदुर्लभ तथा अमीनचन्द एक बिचौलिए के रूप में सम्मिलित हुए। यह तय हुआ कि मीर जाफर को नवाब बना दिया जाए और वह इसके लिए कम्पनी को कृतार्थ करेगा तथा उसकी हानि की क्षतिपूर्ती भी करेगा।

अंग्रेजों ने मार्च 1757 में फ्रांसीसी बस्ती चन्द्रनगर को जीत लिया। नवाब इससे बहुत क्रुद्ध हुआ। 23 जून 1757 ई० को प्रतिद्वन्दी सेनाएँ मुर्शिदाबाद के दक्षिण में 22 मील की दूरी पर स्थित प्लासी गाँव में टकराई। अंग्रेजी सेना में 950 यूरोपीय पैदल सैनिक, 100 यूरोपीय तोपची, 50 नाविक तथा 2100 भारतीय सैनिक थे। नवाब की 50,000 सेना का नेतृत्व विश्वासघाती मीरजाफर कर रहा था। नवाब की एक अग्रगामी टुकड़ी जिसके नेता मीर मदान तथा मोहनलाल कर रहे थे, अंग्रेजो को शुरुआत में रण दिया उसने क्लाइव को वृक्षों के पीछे शरण लेने पर बाध्य कर दिया। सहसा एक गोली से मीर मदान मारा गया। नवाब सिराजुद्दौला ने अपनी प्रमुख अधिकारियों से विचार किया। मीरजाफर ने उसे पीछे हटने की

Date
Page

कहा। सिराज 2000 घुड़सवारों सहित मुर्शिद
बाद लौट गया। ~~फ्रांसीसी टुकड़ी~~ मीरजाफ़र
25 जून को मुर्शिदाबाद लौट गया उसने अपने
आपको नवाब घोषित कर दिया। सिराज को
बन्दी बना लिया गया तथा उसकी हत्या कर
दी गई। मीरजाफ़र ने अंग्रेजों को उनकी
सेवाओं के लिए 24 परगनों की जमींदारी
से पुरस्कृत किया। क्लाईव को 2,34,000
पाउंड की निजी भेंट दी। 50 लाख रुपया
सेना तथा नाविकों को पुरस्कार के रूप में
दिए। बंगाल की समस्त फ्रांसीसी बस्तियाँ
अंग्रेजों को दे दी। यह भी निश्चित
हुआ कि भविष्य में अंग्रेज पदाधिकारियों
तथा व्यापारियों को निजी व्यापार पर कोई
चुंगी नहीं देनी होगी।

—x—

Scanned with CamScanner